

Padma Shri



SHRI RAMAN CHERUVAYAL

Shri Raman Cheruvayal is a tribal farmer from Kerala, who is known for his contribution to sustainable agriculture and preservation of bio diversity.

2. Born on 6th June, 1952, at Mananthavady, Wayanad District, Shri Cheruvayal belongs to Kurichyan caste of Scheduled Tribe Community. At the age of 10, he began his pursuing in agriculture. His works in organic farming, natural resource management and conservation of traditional food crops have made him a unique figure among other natural lovers and earth researchers.

3. Shri Cheruvayal has a collection of 52 varieties of paddy seeds and various types of banana plants, which are unique in Kerala. Two of the varieties of paddy i.e. 'palthondi' and 'kayama' have been used as donor of gene for the development of rice varieties at Keaia Agricultural University. One of the pepper variety 'uthirankotta' has contributed towards the development of panniyoor 1, the most widely planted pepper breed of Kerala.

4. Shri Cheruvayal was an invitee of Belame 30 International Conference on Nature at Brazil in 2018. He was certified in outstanding contribution by Indian Institute of Rice Research in 2015 for adoption and popularization of new varieties and technology of rice. Apart from this, he was invited for presentations in agriculture and organic farming conducted by various organizations and institutions across the country.

5. Shri Cheruvayal has been honoured with many awards. He was awarded with Plant Genome Saviour (Farmer Recognitions 2013) by the Government of India and Kerala State Bio-diversity Board (Green individual) in 2012. He was awarded at agricultural Fest in 2018 organized by Habitat School, Al Tallah, Ajman. He was awarded testimonials by Tamilnadu Agricultural University and participated in Kerala State Biodiversity Congress, 2019.



श्री रामन चेरुवयल

श्री रामन चेरुवयल केरल के आदिवासी किसान हैं, जिन्हें सतत कृषि और जैव विविधता के संरक्षण के क्षेत्र में उनके अतुलनीय योगदान के लिए जाना जाता है।

2. 6 जून, 1952 को मनंथवाडी, वायनाड जिले में जन्मे, श्री चेरुवयल अनुसूचित जनजाति समुदाय की कुरिचयन जाति से हैं। वह 10 साल की अल्पायु से ही कृषि कार्यों में संलिप्त हैं। जैविक खेती, प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन और पारंपरिक खाद्य फसलों के संरक्षण के क्षेत्र में अपने कार्यों की वजह से, उन्हें दुनिया भर के प्रकृति प्रेमियों और धरती के विषयों के शोधकर्ताओं के बीच एक अद्वितीय व्यक्तित्व के रूप में जाना जाता है।

3. श्री चेरुवयल के पास 52 किस्मों के धान के बीज और विभिन्न प्रकार के केले के पौधों का संग्रह है, जो केरल में अपनी तरह का अनूठा संग्रह है। केरल कृषि विश्वविद्यालय में चावल की किस्मों के विकास के लिए धान की दो किस्मों यानी 'पलथोंडी' और 'कयामा' का उपयोग जीन प्रदाता के रूप में किया गया है। 'उथिरनकोट्टा' जो काली मिर्च की एक प्रमुख किस्म है, ने केरल की सबसे व्यापक रूप से उगाई जाने वाली काली मिर्च की नस्ल पन्नियूर 1 के विकास में योगदान दिया है।

4. श्री चेरुवयल को वर्ष 2018 में ब्राजील में प्रकृति पर बेलेम 30 अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में आमंत्रित किया गया था। उन्हें चावल की नई किस्मों और प्रौद्योगिकी को अपनाने और उन्हें लोकप्रिय बनाने के लिए 2015 में भारतीय चावल अनुसंधान संस्थान द्वारा उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रमाणपत्र दिया गया था। इसके अलावा, उन्हें देश भर के विभिन्न संगठनों और संस्थानों द्वारा आयोजित कृषि और जैविक खेती में प्रस्तुति देने के लिए आमंत्रित किया जाता है।

5. श्री चेरुवयल को कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। उन्हें भारत सरकार द्वारा प्लांट जीनोम सेवियर (फार्मर रेकोग्नीशन 2013) और 2012 में केरल राज्य जैव-विविधता बोर्ड (ग्रीन इंडिविजुअल) से सम्मानित किया गया था। उन्हें हैबिटेट स्कूल, अल तल्लाह, अजमान द्वारा आयोजित 2018 में कृषि उत्सव में सम्मानित किया गया था। उन्हें तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय द्वारा प्रशंसापत्र से सम्मानित किया गया और उन्होंने केरल राज्य जैव विविधता कांग्रेस, 2019 में भाग लिया।